2.भारतीय संस्कृति का उत्स वैदिक वांडमय

डॉ0 आभा रानी *

ABSTRACT: This paper is a reflection of Indian culture and civilization in the lights of holy Vedas. The author in this paper considers the Holy Vedas as the origin of enriched and spiritual civilization of India. The Vedas ("knowledge") are a large body of texts originating in ancient India. Composed in Vedic Sanskrit, the texts constitute the oldest layer of Sanskrit literature and the oldest scriptures of India. The Vedas are apauruṣeya ("not of human agency").They are supposed to have been directly revealed, and thus are called śruti ("what is heard"), distinguishing them from other religious texts, which are called smṛti ("what is remembered"). The Rigveda, containing hymns to be recited by the hotar, or presiding priest; The Yajurveda, containing formulas to be recited by the adhvaryu or officiating priest; The Samaveda, containing formulas to be sung by the udgatar or priest that chants; The Atharvaveda, a collection of spells and incantations, apostrophic charms and speculative hymns.

Keywords: Indian culture, Indian civilization, The Vedas

FULL TEXT:

वेद आर्यो ं का पवित्र–धर्म–ग्रथं है। वे इन्हें ईश्वरीय ज्ञान मानते है। इनकी सारी धार्मिक निष्ठा इसी पर आधारित है। भारतीय संस्कृति की गंगा का उत्स वैदिक वाड.मय है। भारतीय परम्परा तो उसे मानवीय सृष्टि के साथ ही उद्‌भूत मानती है। किन्तु पाश्चात्य दृष्टि से उसका उद्‌भव 8000 ई0 पूर्व से 3000 ई0 पूर्व निर्धारित करती है। भारतीय संस्कृति का प्रारम्भिक रूप हमे ं वैदिक साहित्य मे ं ही प्राप्त होता है। वेद कालीन समाज ने अपने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक और कलात्मक – अभ्युत्थान के लिए जिस जीवन दर्शन का निर्माण किया वह हमें वैदिक साहित्य में ही मिलता है। अतः यहाँ सक्षेप में उसका वर्णन अपेक्षित ळें भारतीय वेद की निन्दा करना पाप मानते है। वेदो ं की सख्ंया चार हैं। इनमे ं ऋग्वेद सबसे पुराना है। यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इसके बाद आते हैं। इनकी रचना ऋषियों ने की थी। इसी से इनको मंत्र दृष्टा कहा गया है। ये वेद संसार के सबसे पुराने ग्रंथो में से हैं। इससे मानव सभ्यता के विकास मे ं भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

वेदो ं के मुख्य दो भाग है (1) संहिता भाग (2) ब्राह्मण भाग।

मंत्रो ं के समूह को सहिंता कहते हैं। ब्राह्मण तीन खण्डों में बँटा हुआ है–

(1) ब्राह्मण (2) आरण्यक (3) उपनिषद।
वस्तुतः उपनिषदों तक ही वैदिक साहित्य की सीमा है। अतः मुख्य रूप से वैदिक साहित्य के अन्तर्गत सहिंताएँ, ब्राह्मण ग्रंथ आरण्यक और उपनिषद आ जाती है। वेदांग उसकी सीमा में नहीं आते।

सहिंताएँ चार है ं – (1) ऋक् सहिंता (2) यजु सहिंता (3) साम सहिंता (4) अथर्व सहिंता। इन चारों को ही वेद कह कर पुकारा जाता है। ऋक् संहिता इसमे ं सबसे प्राचीन है। देवता विशेष की स्तुति मे ं इस सहिंता के मंत्र उपलब्ध होते हैं। देवता विशेष की स्तुति मे ं प्रयुक्त होने वाले अर्थ को स्मरण कराने वाले वाक्य ही मंत्र हैं।
ऋक् स ंहिता के दो प्रकार के सगं्रह क्रम उपलब्ध होते है ं (1) मंडल क्रम (2) अष्टक क्रम।
मंडल क्रम मे ं मंडल, अनुवाद और सूक्तो ं मे ं बंटा हुआ है। अष्टक क्रम अष्टक अध्याय और सूक्तो ं मे ं बंटा हुआ है। अष्टक क्रम अष्टक अध्याय और सूक्तो ं मे ं विभाजित है। मंडल क्रम के अनुसार सारी ॠक् संहिता 10 मंडलो ं मे ं 1028 सूक्तो ं मे ं विभक्त है। यह क्रम अधिक ऐतिहासिक और

वैज्ञानिक माना जाता है। ऋग्वेद के कुल मंत्रो ं की संख्या 10580 है। वेद मंत्रो ं का संकलन विभिन्न कालो ं मे ं किया गया है। दूसरे मंडल से लेकर सातवे ं मंडल तक के छः मंडल अपेक्षाकृत पुराने हैं। इसका सग्रंह किसी विशेष ऋृषि या उनके वशंजो ं द्वारा किया गया है। इस कारण इस मंडल को वशं मंडल भी कहा गया है। मंडलो के बाद क्रमशः अष्टक, नवम प्रथम तथा दशम मंडल की रचना की गयी है। प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से यह सं हिता स्तुति परक गीतियों का संकलन है। इसके मुख्य देवता 33 है। इनकी स्तुतियाँ ही प्रमुख रू‍प से वर्णित है। ये देवता तीन भागों मे ं बंटे हुए है– (1) स्वर्ग स्थित (2) अंतरिक्ष स्थित (3) पृथ्वी स्थित। स्वर्ग स्थानीय देवताओ ं मे ं वरूण, सर्यू, मित्र, उषा आदि प्रमुख हैं। अंतरिक्ष स्थानीयो ं मे ं इन्द्र, रूद्र, वायु आदि है। पृथ्वी स्थानीय मे ं पृथ्वी, अग्नि, सोम आदि हैं। इस प्रकार यह संहिता ज्ञान कांड है। इसमे ं काव्यत्व भी अपने मनोहरी रूप मे ं मिलता है। यजुः सं हिता का प्रमुख प्रतिपाय यज्ञानुष्ठान है।
यजुसु का अर्थ गद्य है। अतः इसमे ं गद्य की प्रधानता है।
इस संहिता के भी दो भेद हैं– (1) कृष्ण यजुर्वेद (2) शुक्ल यजुर्वेद एक पौराणिक कथानुसार वैशंपायन ने वेद व्यास जी से इस वेद की शिक्षा ग्रहण की वैशंपायन से याज्ञवल्क्य ने सीखी। एक बार किसी कारणवश वैशंपायन याज्ञवल्क्य से नाराज हो गए, उन्होंने अपनी विद्या वापस माँगी। गुरू आज्ञा से याज्ञवल्क्य ने पठित यजुषो ं को उगल दिया। वैशंपायन के शिष्यो ं ने इस विद्या को तीतरो ं का रूप धारण करके चुग लिया। इस प्रकार चुगा गया यजुर्वेद कृष्ण यजुर्वेद कहलाया। बाद मे ं याज्ञवल्क्य ने सयू र्य की आराधना करके नए यजुषों को प्राप्त किया वह शुक्ल यजुर्वेद कहलाया। साम सं हिता को सामवेद कहा गया है। इसकी अधिकमाशं रचनाएँ ऋग्वेद से ली गयी है। इनकी सखं या 1549 है। संगीत का उद्‌गम इसी वेद से हुआ है। यह वेद गाकर पढ़ा जाता है। अथर्व संहिता अथर्ववेद के नाम से पुकारा जाता है। इसके मंत्रो ं का संबधं यज्ञानुष्ठान से न होकर विध्नो ं के निवारण से है। वैद्यक और जाद ू आदि इनके प्रमुख विषय हैं। जादू–टोना की मारन, मोहन, उच्चाटन आदि क्रियाओं का इसमें विशेष विवरण उपलब्ध है।

भारत एक प्राचीन देश है। विश्व के समुन्नत देशों मे प्रारम्भ से ही इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसकी अपनी एक भौगोलिक स्थिति रही है। यद्यपि आज यह भौगोलिक स्थिति भारत और पाकिस्तान के रू‍प मे ं वभिाजित हो चुकी है, परन्तु जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय दोनों देशों मे ं विकसित संस्कृति से ही होता है। सिन्धु सभ्यता ऐतिहासिक दृष्टि से भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। इतिहास के अनुसार भारत की लगभग 3500 ई0 पूर्व से 2250 ई0 पूर्व तक की प्राचीनतम सभ्यता सिन्धु सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध है। सन 1922 ई0 से 1930 ई0 तक सिन्धु प्रान्त के मोहनजोदड़ो और सन 1923 ई0 से 1925 ई0 तक पंजाब के हड़प्पा नामक स्थानो ं की खुदाई के बाद वहॉ जो अवशेष मिले हैं, उससे यह ज्ञात हुआ है कि किसी समय यहाँ

एक पर्णू विकसित सभ्यता और संस्कृति विद्यमान थी। इसे अनुसधं ाान कर्त्ताओ ं ने नगर प्रधान सभ्यता कहा है। बाद की खुदाइयों मे ं सिन्धु के कोट दीजी, अलीमुराद, चन्हुदड़ो और पंजाब के रोपड़, बाड़ा, सधोल के अतिरिक्त हरियाणा के राखी गड़ी, बणावली, मीत्ताथल, राजस्थान के कालीबगं ा, उत्तर प्रदेश के आलमगीर पुर (मेरठ) गुजरात के रगं पुर, लोथल, रोजदि, सुरकोटड़ा और मालवगढ ़ नामक स्थानो ं पर भी इस सभ्यता के अवशेष मिले हैं। बलोचिस्तान के सुत्कगेनेडोर, सोत्काकोट, डाबर कोट स्थानो ं में भी इस सभ्यता ने अपना अस्तित्व प्रमाणित किया है। इससे स्पष्ट है कि यह सभ्यता केवल सिन्धु नदी के क्षेत्र तक ही सीमित नही ं थी अपितु भारत के दूर–दूर तक इसका विस्तार था। इस सभ्यता की नगर–विन्यास, योजना स्थापत्य कला, पाषाण, धातु और मिट्टी की मू र्तियो,ं मुद्राओ,ं ताम्रपत्रो,ं मानको,ं मृत्भाण्डो,ं युद्ध सम्बधं ी उपकरणो,ं परिधानो,ं आभूषणो,ं लिपि तथा चित्र आदि कलाकृतियों को देखकर यह आश्चर्य अवश्य होता है कि इतनी महान सभ्यता का कोई भी प्रभाव बाद की पीढियों में अवशिष्ट क्यों न रहा? किस महाविनाश के काल मे ं इस सभ्यता के सभी प्रतिनिधि समा गए? इस महान देश के निवासी इससे नितांत अपरिचित कैसे रहे? उन पर इसका प्रभाव क्यों नही ं पड़ा ? इन्ही ं सब कारणो ं से इस सभ्यता का उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टि से ही किया जाता है। भारतीय होने पर भी उसे भारतीय संस्कृति की सीमा के अन्तर्मुक्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि संस्कृति तो एक निरंतर प्रवाहमान धारा है जो युगों–युगों से जन–जीवन को समुन्नत बनाती चली आ रही है। आज वर्तमान मे ं भी नव जीवन प्रदान करने मे ंसमर्थ है।

सिन्धु संस्कृति के बाद की संस्कृति वैदिक संस्कृति है।यह आर्य सस्ंकृति अथवा हिन्द ू सस्ंकृति के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दुओ के धर्म का आधार वेद हैं अतः वेदो ं के आधार पर विकसित संस्कृति को वैदिक सस्ंकृति के नाम से जाना जाता है। चारों वेदों का प्रणयन भारत मे हुआ और इनके व्याख्या भागों ब्राह्मण ग्रथों,ं आरण्यक ग्रंथों और उननिषदों की रचना भी यही ं हुई। व्यापक अर्थ मे ं उक्त समस्त साहित्य आर्यो ं के धर्म ग्रथं है ं और इनके सिद्धान्तो ं के आधार पर ही उनके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक और कलात्मक जीवन का संगठन हुआ है। अतः इससे निष्पन्न जिस संस्कृति का जन्म हुआ उसे वैदिक संस्कृति कहा गया है। 3000 ई0 पूर्व से लेकर आजतक के हमारे समस्त जीवन को यही संस्कृति सबसे अधिक आन्दोलित और प्रभावित कर रही है। इसी लिए इसे ही भारतीय संस्कृति कहा जाता है।

संस्कृति के सुधी समीक्षक डॉ0 एन0 के0 देवराज ने इस संबधं में अपना मत देते हुए कहा है– ''हमारे देश के विभिन्न भागो ं और विभिन्न ऐतिहासिक युगों में अनेक धर्मो ं तथा सस्ंकृतियो ं ने जन्म एव ं प्रसार पाया। यहाँ अनेक धर्म–प्रवर्तक उत्पन्न हुए और इस देश मे ं धर्म एव ं संस्कृति का गहरा संबधं रहा है। फलतः धर्म शिक्षकों ने भारतीय संस्कृति अथवा विभिन्न रूपो ं को प्रभावित

किया। इस देश मे ं कम से कम दो महत्वपूर्ण धर्म फैले और वेदो और उपनिषदों पर आधारित हिन्द ू धर्म तथा वेद–विरोधी अथवा अवैदिक धर्म (बौद्ध धर्म)। बाद मे ं इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म भी यहाँ की भूमि में प्रविष्ट हुए। यहाँ बहुत सी विदेशी जातियाँ भी आयीं– यूनानी लोग कुषाण, शक, हूण, पठान और मुगल, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अग्रेंज आदि। ये सभी जातियाँ भारत में आकर बस गयीं या बसने का प्रयत्न किया। कुछ ने जो यहाँ नही बसीं; हमारी आबादी के गठन पर दूसरे चिह्न छोड ़ दिए; जैसे अंग्रेजो ं ने यहॉ एक लम्बी सख्या ईसाइयों की उत्पन्न की और एग्लो इंडियन जाति को जन्म दिया।

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत उक्त सभी जातियो ं तथा उनके विभिन्न धर्मो ं से संबंधित सास्ंकृतिक धाराओ ं का समावेश हो सकता है, फिर भी यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि हिन्दू संस्कृति इस देश की सबसे अधिक व्यापक एवं समृद्ध संस्कृति है। वह सबसे बड़ी और चौड़ी सांस्कृतिक धारा है। जिस अन्य उपधाराओ ं ने पुष्ट किया हैं, सम्पन्न किया है। बौद्धो ं ने जिस कर्मकाण्ड और हिंसक यज्ञो ं का विरोध किया, वह भी हमारे देश के इतिहास मे बहुत नयी चीज नही ं थी। कर्मकाण्ड का विरोध उपनिषदो ं मे ं ही शुरू हो गया था। बौद्धो ं के निर्वाण और हिन्दुओं की मुक्ति में विशेष अन्तर नही ं है। वस्तुतः इस देश के सभी धर्मो ं मे ं मुक्ति तथा उसके उपायो ं के बहुत कुछ समान वर्णन मिलते हैं। इस दृष्टि से बौद्ध धर्म और जैन–धर्म हिन्द ू धर्म से वैसी भिन्नता नही रखते जैसे बाद के अनेक सम्प्रदाय मे ं मिलती है। देखने वाली बात यह है कि बौद्ध धर्म इस देश से लुप्त सा हो गया, वहॉ इस्लाम के आने से पहले दूसरा कोई धर्म हिन्दू–धर्म के प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे ं प्रतिष्ठा नही ं पा सका। यह सच है कि इस देश की धरती पर किसी दूसरे धर्म ने जीवन के संबंध मे ं उतना पर्णू एव ं व्यवस्थित चिन्तन नहीं किया जैसा कि हिन्द ू धर्म ने। हिन्दू संस्कृति ही इस देश की सबसे प्रधान एव ं व्यापक संस्कृति है। यह स्पष्ट है कि वैदिक सस्ंकृति की गगां ही युगों–युगो ं से भारत के जन–जीवन को नए जीवन से अनुप्राणित कर रही है।

भारतीय संस्कृति की गंगा का उत्स वैदिक वाङ.मय है। वैदिक वाङमय के अनुशीलन से हम तत्कालीन आर्यो ं के सांस्कृतिक तत्वों का अनुसधांन सरलता से कर सकते हैं। आर्यो ं ने अनेकता मे एकता, ऐहिकता और पारलौकिकता के सुन्दर समन्वय और मानव के समग्र जीवन के सानुपातिक विकास की व्यवस्था द्वारा विश्व की सर्वाधिक पुरातन और सर्वोच्च संस्कृति का निर्माण किया था। उन्होंने जिन सांस्कृतिक तत्वो ं के आधार पर अपना पूर्ण विकास किया उनमें प्रमुख सामाजिक संगठन, पारिवारिक जीवन एव पुरूषार्थ चतुष्टय आदि हैं। वेद कालीन भारतीय आर्यो ं ने तीन प्रकार की शक्तियाँ– (1) शारीरिक (2) मानसिक या बौद्धिक (3) आध्यात्मिक के सामंजस्य पर्णू विकास को अपना लक्ष्य बनाया था। शारीरिक शक्ति के विकास के लिए व्यायाम, यम, नियम,

प्राणायाम, आसन, ब्रह्मचर्य आदि का विधान किया था। मानसिक या बौद्धिक विकास के लिए कर्मोन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय, मन, बुद्धि, स्थूल शरीर, सक्ष्म शरीर आदि के ज्ञान द्वारा मानसिक विकास की मनोहर योजना बनाई थी। ब्रह्म, जीव, प्रकृति की विवेचना द्वारा आत्मसाक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त कर जीवन–भरण के बधंन से मुक्ति का साधन खोज निकाला था जो आज भी भारतीय सस्ंकृति के मूल प्राण तत्व है। इन प्राण तत्वों की उद्‌गम स्थली वैदिक वाङ.मय है। वही भारतीय संस्कृति का उत्स है।

*डॉ0 आभा रानी, रांची विश्वविद्यालय रांची के अंगीभूत एस एस मेमोरियल कॉलेजके हिन्दी विभाग की अध्यक्षा हैं तथा उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान साहित्यकार निर्दिर्शिनी में सम्मिलित समकालीन हिन्दी साहित्यकार हैं |

Cite

MLA रानी डॉ. आभा. "भारतीय संस्कृति का उत्स: वैदिक वांडमय." *SOCRATES* 2.1 (2014): 6-11.

APA रानी डॉ. आभा. (2014). भारतीय संस्कृति का उत्स: वैदिक वांडमय. *SOCRATES*, *2*(1), 6-11.

Chicago रानी डॉ. आभा. "भारतीय संस्कृति का उत्स: वैदिक वांडमय." *SOCRATES* 2, no. 1 (2014): 6-11.